Vijay Kumar Jha
Asso prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar
Degree Part III
Paper - VII

George Washington in America

वाशिंगटन का जन्म 11 फरवरी 1732 ई० को वर्जीनिया में हुआ था। 20 जुलाई 1749 ई० को वाशिंगटन ने भूमापक का कार्य सम्भाला कुछ समय बाद वह अमेरिकी सेना में शामिल हो गया और उन्होंने कई काउन्टी और सेना के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया। जार्ज वाशिंगटन अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति थे किन्तु उनकी कीर्ति एक राष्ट्रपति के रूप में नहीं बल्कि एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अधिक है। उसने अमेरिका की स्वाधीनता के लिये अपार कष्ट झेला और 1752 ई० में मेजर के पद से अपना सैनिक जीवन प्रारम्भ किया और 1758 ई० में वह वर्जीनिया के प्रतिनिधि चुने गये। उनकी यह सफलता अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। 1761 ई० में वह दक्षिण की यात्रा घोड़ागाड़ी से तय की। 1774 ई० में वह ऐतिहासिक फिलाडेल्फीया सम्मेलन में वर्जीनिया का प्रतिनिधित्व किया। 16 जून 1775 ई० को वह उत्तरी अमेरिका के संयुक्त प्रान्तों के अध्यक्ष बने और उसने ब्रिटिश सरकार को अमेरिका को मान्यता देने के लिये बाध्य किया। 28 मई 1787 ई० को वे फिलाडेल्फीया में Federal Conference का अध्यक्ष चुना गया। जार्ज वाशिंगटन 17 सितम्बर 1787 ई० को संविधान प्रारूप पर हस्ताक्षर किये। 30 अप्रैल 1789 ई० को वह अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति के पद पर बैठा।

जिस समय वे राष्ट्रपति बने उस समय अमेरिका की स्थिति अच्छी नहीं थी। नवीन संविधान को न तो किसी परम्परा का सहारा था और न संगठित लोकमत का समर्थन प्राप्त था। न्याय विभाग की स्थापना न होने के कारण कानून लागू करने की व्यवस्था नहीं थी सैनिक दुर्बल एवं कमजोर थे। वाशिंगटन ने इन्हीं दशा में संयुक्त राज्य के संविधान के परिक्षण, संरक्षण का वादा किया।

वाशिंगटन चतुर होने कि अपेक्षा सरल बनना चाहते थे। वह साहसी नम्र तथा शालीन थे। उसकी योग्य नीतियों से देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा तथा व्यापार तथा उद्योग कि विकास तीव्र गति पकड़ा। मैसाच्युसेट्स तथा न्यू इंग्लैण्ड में कपड़ो के महत्वपूर्ण उद्योग की नींव पड़ी। वाशिंगटन 1797 ई० तक राष्ट्रपति के पद पर रहे। 4 जुलाई 1798 ई० को वाशिंगटन ने लेफ्टीनेंट जेनरल और प्रधान सेनापति का पद ग्रहण किया। 14 दिसम्बर 1799 ई० को इस महान स्वतंत्रता सेनानी और अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति का देहान्त हो गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका बिखराव को समेटकर एक सम्पूर्ण सार्वभौम राष्ट्र बन गया था। अमेरिका के राजनीतिक व्यवस्था एक नये आयाम कि ओर अग्रसर हो रहा था और 1788 ई० में अमेरिकी जनता में आम चुनाव में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। अमेरिकी जनता को यह प्रथम अवसर मिला कि वह गुलामी कि जंजीर से मुक्त होने जा रही थी। निर्वाचित कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 4 मार्च 1789 ई० को न्यूयार्क में हुआ था। इस समय फ्रांस में क्रांति कि लहर चल रही थी इस अधिवेशन में सर्व सम्मति से वाशिंगटन को अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति चुन लिया गया। वाशिंगटन के अपनी शहर पोटोमेक से न्यूयार्क तक जनता उनका भव्य स्वागत किया। 10 अप्रिल 1789 ई० को अमेरिका के राष्ट्रपति पद कि गोपनीयता कि शपथ ली। वह लोकतंत्रीय व्यवस्था के प्रथम प्रहरी के रूप में अपना कार्यभार ग्रहण किया।

वाशिंगटन कि प्रथम समस्या युद्ध के बाद अमेरिका की राजनीतिक व्यवस्था को सुधारना था। अमेरिका को लोकतांत्रिक व्यवस्था का पालन करना आवश्यक था तथा नये सरकार के लिये प्रशासनिक ढाँचा खड़ा करना आवश्यक था जिससे उद्योग, कृषि व्यापार आगे बढ़ सके। वाशिंगटन ने सरकार कि कामकाज सुचारू रूप से चलाने के लिये तीन विभाग कि स्थापना किया (i) सेक्रेटरी आफ स्टेट (ii) सेक्रेटरी आफ ट्रेजरी (iii) सेक्रेटरी आफ वार इन तीन विभागों के अतिरिक्त कानूनी समस्याओं के निराकरण के लिये अटोर्नी जेनरल के पद सृजन किया गया। पोस्टमास्टर जेनरल के पद सृजित किया गया।

वाशिंगटन विभिन्न विभागों के सहयोग से अपना कार्य प्रारम्भ किया। 24 सितम्बर 1789 ई० को Federal Judiciary act पास किया जिसमें एक प्रमुख न्यायाधीश तथा 4 न्यायाधीश नियुक्ति किये। सेक्रेटरी आफ ट्रेजरी के पद पर Hamilton

आर्थिक नीति — वह कुलीनतंत्र का समर्थक था अतः उसे पूंजीवाद का मसीहा कहा जाता है। देश कि आर्थिक विकास के लिये मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया। हैमिल्टन के सुधारों का कैबिनेट के सदस्य ने विरोध किया। किंतु वाशिंगटन ने यह उद्घाटन किया कि हैमिल्टन को पद मुक्त किया जा सकता है किंतु उसकी व्यवस्था को बदला नहीं जा सकता है। हैमिल्टन ने ऋणों कि अदायगी के लिये विभिन्न नियम बनाये। क्रांतिकाल में राज्यों द्वारा लिये गये ऋणों को चुकाने कि जिम्मेदारी संघीय सरकार पर डाला। हैमिल्टन के इस प्रस्ताव को उत्तर के राज्य ने समर्थन किया

आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिये हैमिल्टन ने आबकारी नीति के अंतर्गत शराब पर कर लगाने का सुझाव दिया। हैमिल्टन ने राष्ट्रीयकृत बैंकों कि स्थापना किया जहां नोट छापने तथा सिक्के ढालने कि व्यवस्था किया जिससे व्यापारियों को खरीद बिक्री में सहूलियत होती थी हैमिल्टन ने व्यापारियों कि सुरक्षा के लिये रक्षात्मक शुल्क लगाया क्योंकि व्यापारी वर्ग ने इसका विरोध किया लेकिन अमेरिकी उद्योग धंधों के लिये यह काफी लाभकारी सिद्ध हुआ

इस प्रकार वाशिंगटन ने वित्त सचिव हैमिल्टन के माध्यम से नव जात संघीय व्यवस्था को दृढ़ आर्थिक आधार प्रदान किया। हैमिल्टन ने पूंजीवादी व्यवस्था को अपना समर्थन और संरक्षण दिया।

Scanned with Cam